



सिडनी-ऑस्ट्रेलिया। 'द फ्यूचर ऑफ पाँवर' कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में पीटर अरिल, ईकोलॉजिस्ट, माइकल हार्मर, चेयरमैन, हार्मर वर्कप्लेस लॉयर्स, प्रो. किम कुनियो, बियांका पेस, चेयरमैन, मिनिस्ट्री ऑफ पीस, पीटर मानिसकेल्को, आर्टिस्टिक स्टोन फाउण्डर, महेश त्रिवेदी, प्रेसीडेंट, ट्रिवू ब्लेसिंग्स इंस्टीट्यूट, जगदीश दुबा, साईकोलॉजिस्ट, अनुज लूम्बा, बिज़नेस एनालिस्ट, एलेक्जेंडर यूल्से, एजुकेटर, नीरू चड्ढा, साईकोलॉजिस्ट, ब्र. कु. मोरनी चैन, चार्ली हॉग, नेशनल कोऑर्डिनेटर, बी.के.ए., निज़ार जुमा, इंडस्ट्रियलिस्ट, केन्या, कोन्ने डेज़होल्ड, ऑनर, डेज़होल्ड गैलरी, एलेक्जेंडर लुसकोम्बे, मैनेजर, डिपार्टमेंट ऑफ ट्रेड एंड इनवेस्टमेंट, ब्र. कु. प्रवीण त्रिवेदी, निकेता कोसाडा, इनवेस्टमेंट बैंकर, पर्सी नाइट, एसोसिएट लेक्चरर, युनिवर्सिटी ऑफ सिडनी, विक्टर पार्टन, ऑस्ट्रेलियन लीडरशिप फाउण्डर, कैरोल यंग, ईकोस्टेप्स डायरेक्टर, प्रो. कालविंडर शिल्ड्स, महेश एन्जेटी, एम. डी., साई मार्केटिंग काउंसिल, आशीष कुमार लुम्बा, पी.एच.डी. स्टूडेंट, प्रीति कंसल, फाउण्डर, आगाज़ चैरिटेबल फाउण्डेशन तथा अन्य प्रतिष्ठित लोग।



वाराणसी-श्रीराम नगर कॉलोनी। मानव संसाधन राज्यमंत्री डॉ. महेन्द्र नाथ पाण्डेय को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्रह्माकुमारी बहन।



जगन्नाथपुरी-ओडिशा। सेवाकेन्द्र की 40वीं वर्षगांठ व दादी प्रकाशमणि के स्मृति दिवस पर दीप प्रज्वलित करते हुए प्रोफेसर हरेकृष्ण सतपथी, पूर्व वाइस चांसलर, तिरुपति नेशनल संस्कृत यूनिवर्सिटी, आ.प्र., मधुसुदन दास, सब कलेक्टर एंड एस.डी.एम., लिंगराज मिश्रा, डेप्युटी कमांडेंट, होम गार्ड, ब्र.कु. निरूपमा तथा अन्य।



वयाना-भरतपुर(राज.)। राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी के स्मृति दिवस पर श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए विकास अधिकारी समय सिंह गुर्जर, बी.सी.एम. ओ. पुरनमल मीणा, ब्र.कु. कनक तथा अन्य।



गंगोह-उ.प्र.। लायन्स क्लब के अध्यक्ष अरविन्द पाल कपूर को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. संतोष।



चितौड़गढ़-राज.। व्यसन मुक्ति केन्द्र में राजयोग मेडिटेशन कराने के पश्चात् ब्र.कु. गंगाधर, माउण्ट आबू, ब्र.कु. अनुज, दिल्ली, ब्र.कु. मधु तथा अन्य।



फाजिल नगर-उ.प्र.। बाढ़ पीड़ितों के लिए खाद्य पदार्थ एवं अन्य राहत सामग्री भेजते हुए सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. भारती। साथ हैं ब्र.कु. रिकू, ब्र.कु. सावित्री, ब्र.कु. सूरज तथा अन्य।

रिश्तों और धन में ज्यादा महत्वपूर्ण..?

- ब्र.कु. नेहा, मुम्बई

प्रेम आत्मा की प्यास और हृदय की एकमात्र चाहना है। यदि प्रेम नहीं मिलेगा तो जीवन हरा भरा नहीं रह सकेगा, और अवश्य ही मुरझा जायेगा चाहे बाहर से उसे धन संपत्ति, यश और वैभव के भंडार सें ही क्यों न भर दिया जाए।

'धन' स्वस्थ और संपन्न जीवन जीने के लिए जीवन में बहुत महत्वपूर्ण स्रोत है। तथापि इसकी तुलना रिश्तों, प्रेम और देखभाल से नहीं की जा सकती। दोनों का अपना अलग अलग महत्व और लाभ है।

यह मानव के मस्तिष्क पर निर्भर करता है कि वह धन को किस तरीके से लेता है। कुछ लोग इसे केवल अपनी भौतिक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए ही प्रयोग करते हैं और वह इसे कभी भी दिल से नहीं लेते।

धन के अभाव में मनुष्य को बहुत सारे कष्टों का सामना करना पड़ता है। धन हमें सभी आवश्यक चीजों को खरीदने के योग्य बनाता है और पूरे जीवन भर हमारी मदद करता है। लेकिन हम धन और प्यार की तुलना नहीं कर सकते, क्योंकि एक सफल जीवन जीने के लिए हमें धन और प्यार दोनों की अलग-अलग आवश्यकता है।

धन समाज में व्यक्ति के मान सम्मान में वृद्धि करता है और उसकी एक अच्छी छवि का निर्माण करता है। धन की आवश्यकता सभी को होती है चाहे वह गरीब हो या अमीर, शहरी क्षेत्र का हो या ग्रामीण क्षेत्र का।

रिश्तों में अपनेपन की भावना की खातिर ही व्यक्ति एक दूसरे पर मर मिटने तक को

तैयार हो जाते हैं। व्यक्ति को भौतिक, भावनात्मक, मानसिक व आर्थिक सहयोग की आवश्यकता होती है जो रिश्तेदारों से ही मिल पाता है। रिश्तेदारों से व्यक्ति अक्सर अपने मन की वह सब बातें करते हैं जिन्हें वे अन्य व्यक्तियों से नहीं कर सकते। रिश्तेदार व परिवार व्यक्ति के बुरे समय में साथ खड़े होते हैं। ऐसे में एक अकेले व्यक्ति की पीड़ा पूरे परिवार और रिश्तेदारों की पीड़ा



बन जाती है। वह एकजुट होकर मुसीबत में लड़ते हैं और मुसीबत को दूर भगा कर कामयाबी पाते हैं।

मनुष्य जीवन रिश्तों से जुड़ा हुआ है। रिश्तों के कारण ही मनुष्य जीवन में आगे बढ़ने की, सफलता पाने की, शिक्षित होने की, कार्य करने की इच्छा रखता है। रिश्तों व परिवार में ही अध्यात्म व शांति, प्रेम, सामंजस्य, धैर्य, ईमानदारी आदि सभी मूल्यों व गुणों का विकास होता है।

रिश्ते मन को प्रसन्न रखने, शांति प्रदान करने, बेहतर निर्णय लेने और जीवन की समग्र गुणवत्ता बनाए रखने में सहायक होते

हैं। जब व्यक्ति खरीदारी करता है तो उसे अच्छा लगता है और वह ऐसा महसूस करता है कि मानो उसके आसपास का माहौल खुशनुमा हो गया है। वह सोचता है कि उसके पास पैसा है तो ताकत और रुतबा दोनों हैं, परंतु यह उसकी भूल होती है।

ज़िंदगी में पैसा ही सब कुछ नहीं होता। पैसों से हर चीज़ नहीं खरीदी जा सकती। चाहे इंसान के पास बहुत कुछ हो तो भी उसकी ज़िंदगी उसकी संपत्ति की बदौलत नहीं होती। सही मायने में जीवन में संतुष्टि तब मिलती है जब हम अपनी भावनात्मक व आध्यात्मिक ज़रूरतें पूरी करते हैं, जो कि रिश्तों से ही पूरी होती हैं।

धन को इकट्ठा करने से हमारा भविष्य सुरक्षित नहीं होता है क्योंकि धन कभी भी चुराया जा सकता है। यह हमें बीमारियों और मौत से बचा नहीं सकता है। सच्ची सुरक्षा परिवार व परमेश्वर के साथ ही मिलती है।

पैसों से परिवार की एकता खरीदना नामुमकिन है। अगर आप परिवार में एकता हासिल करना चाहते हैं तो ज़रूरी है कि आप उनके साथ समय बिताएं, प्यार और अपनापन दिखाएं।

यदि जीवन में कभी ऐसा क्षण आये कि रिश्तों और धन दोनों में से किसी एक का चुनाव करना पड़े तो हमें रिश्तों को ही महत्व देना चाहिये।

आनंद में रहने के... - पेज 2 का शेष

मगरमच्छ एक दूसरे को मिले। जरख ने मगर को पूछा: 'बताइये जनाब, आजकल दिन कैसे व्यतीत हो रहे हैं?' मगरमच्छ ने जवाब दिया: 'बहुत खराब दिन बीत रहे हैं। पीड़ा और दुःख से मेरा हृदय रो रहा है! मैं रो रहा हूँ, ये देख लोग कहते हैं कि ये तो मगरमच्छ के आँसू हैं। ये बात मुझे इतनी बड़ी वेदना पहुँचाती है कि मैं कह नहीं सकता!' ये सुनकर जरख ने कहा: 'तू दुःख के रोने का गीत गाता है, लेकिन एक पल के लिए भी मेरी पीड़ा का विचार करके देखा? मैं इस दुनिया की सुंदरता, चमत्कार और आश्चर्यों को देख खुश होता हूँ लेकिन मैं भी निंदा का शिकार

बनता हूँ। अरे! ये तो जरख के लिए हास्य है!'

सारांश यही है कि खुश रहना चाहते हो, आनंद का लुत्फ उठाना चाहते हो तो दूसरों के अभिप्राय की दरकार न रखें। हमारी सबसे बड़ी भूल ये है कि हम आनंद में रहने के बदले दूसरों को उस बात की प्रतीति कराने की इच्छा रखते हैं कि हम आनंद में हैं।

सच्चे अर्थ में आनंद में रहने के लिए पाँच कदम...

1. आनंद को प्राप्त करने के लिए दूसरे के पिछलग्गू न बनें। आनंद को बाहर ढूँढ़ने के बजाय अंदर ढूँढ़ें।
2. आपके भाग्य में आया कर्म ही आपके लिए

आनंद का अवसर है। इसलिए कर्म को पूरी निष्ठा पूर्वक अदा करें।

3. आनंद में रहना हो तो दूसरों की टीका-टिप्पणी, निन्दा-स्तुति से व्यथित न होना। आनंद को अपने अंदर सम्भाल कर रखें।

4. ज़िन्दगी में कभी भी पराजय को स्वीकार न करना। आने वाले कल को उजले अवसर के रूप में देखें और इस सम्भावना की श्रद्धा को अपना सहारा बनायें।

5. आपके जीवन की परिस्थितियों की तुलना दूसरों के आनंदित जीवन के साथ करने के बजाय, मेरी खुशी और गम मुझे मुबारक की भावना को प्रखर बनायें रखें।